इत्तेहादे इस्लामी

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला

इस्लाम में इत्तेहाद और इत्तेफाक़ को बुनियादी हैसियत हासिल है। कुर्आने मजीद में इरशाद हैः *''वअ्तसिमू बिहब्लिल्लाहि जमीअवँ वला तफ़र्रक़ू''* इस हक़ीक़त से कोई इनकार नहीं कर सकता कि कोई भी मक़सद बग़ैर इत्तेहाद हासिल नहीं हो सकता। ख़ुदावन्दे आलम ने इबादात में भी इत्तेहाद को आगे रखा है। दूसरे मज़ाहिब में इबादते ख़ुदावन्दी एक अकेलेपन का काम है इसलिए इबादत जितने ही अकेले में अन्जाम दी जाए उतना ही उनकी नज़र में उस इबादत का दर्जा बड़ा है। इसलिए साधू–सन्त पहाड़ों की गुफाओं, जंगलों, बियाबानों में, आबादियों से दूर जगह ढूँढकर अपने–अपने माबूदों की इबादत में लगे रहते हैं। जबकि इस्लाम ने इसके बिलकुल उलटा ख़याल पेश किया है।

दूसरे मज़ाहिब में जितने अकेले में इबादत हो तो सवाब ज़ियादा ख़याल किया जाता है इस्लाम ने कहा अगर अकेले नमाज़ पढ़ोगे तो सवाब कम है अगर सबके साथ नमाज़ पढ़ोगे तो सवाब बेशुमार। अगर नमाज़ का बेहिसाब बदला लेना है तो जंगलों, बियाबनों को छोड़कर इन्सानी समाज और आबादियों में आना पड़ेगा। हदीसे शरीफ के मुताबिक़ अगर जमाअत में इमाम के अलावा एक मामूम हो तो हर रक्अत पर तीन सौ रक्अतों का सवाब होगा। अगर दो लोग हों तो छः सौ रक्अतों का सवाब होगा। इस तरह दस लोगों तक सवाब दोगुना होता चला जाएगा लेकिन अगर दस लोगों से ग्यारह हो जाएँ तो अब अज्र व सवाब बेहिसाब हो जाएगा।

शायद नमाज़े जमाअत की ताकीद से मक़सदे इलाही यह हो कि जब रोज़ाना पाँच बार महल्ले के लोग एक साथ इकटठा होंगे तो आपस में मुहब्बत पैदा होगी। आपसी ग़लतफहमियाँ दूर होंगी क्योंकि दूरियों से एख़्तिलाफ़ात को हवा मिलती है और क़रीब आने से ग़लतफ़हमियाँ दूर होने का मौक़ा हासिल होता है। या दूसरे लफ़्ज़ों में एख़्तिलाफात डलवाने वालों और लड़वाने वालों की कोशिशें नाकाम हो जाएँगी।

इसके बाद नमाज़े जुमा पर ज़ोर दिया गया है ताकि हफ्ते में एक बार अलग–अलग महल्लों के मुसलमानों में इत्तेहाद व इत्तेफाक़ की फ़िज़ा बने।

इसके बाद हज का फ़रीज़ा है ताकि साल में एक बार सारी दुनिया के मुसलमानों का ज़बरदस्त इज्तेमाअ् हो। सब एक दूसरे के मसाएल को समझें, आने वाली मुश्किलों का एक–साथ हल तलाश करें और आपसी मदद का रास्ता साफ हो। एक मुसलमान अगर अकेले भी इबादत कर रहा हो तो उसे भी ताकीद है कि यही कहेः *''इय्या-क नअ्बुदू''* हम सब तेरी इबादत करते हैं। *''वइय्या-क नस्तअीन''* हम सब तेरी मदद चाहते हैं। इस आयते शरीफा की तफसीर में अल्लमा फख़्रुद्दीन राज़ी ने अपनी तफसीर ''तफसीरे कबीर'' में बड़ी उमदा बात लिखी है कि जब हर नमाज़ी यह कहता है कि हम सब तेरी इबादत कर रहे हैं तो अल्लाह तआला के दरबार

में सारी इबादतें एक साथ पेश की जाती हैं। जिसमें हम जैसे गुनाहगारों की नमाज़ें और इबादतें भी होती हैं और औलिया–ए–ख़ुदा और ख़ुदा के ख़ास बन्दों की भी। नाक़िस नमाज़ें भी और कामिल नमाज़ें भी। इस्लामी तिजारत का उसूल यह है कि अगर किसी ने कोई माल ख़रीदा है तो उसमें अगर कुछ कम है और कुछ सही, तो ख़रीदने वाला या तो सारा माल वापस करेगा या सारा क़बूल करेगा। यह नहीं हो सकता कि अच्छा माल तो रख ले और ख़राब वापस कर दे। इसलिए जब नमाज़ें इलाही दरबार में पहुँचेंगी और एक साथ पहुँचेंगी तो उसमें हम जैसों की कमी वाली नमाज़ें और औलिया–ए–ख़ुदा की कामिल नमाज़ें भी होंगी तो या तो अल्लाह ख़ुद अपने बनाए हुए क़ानून के मुताबिक़ सारी नमाज़ें क़बूल फरमाएगा या सबको रद्द कर फरमाएगा। अगर रद्द फरमाए तो बुज़ुर्गाने दीन की नमाज़ें भी रद्द हो जाएँगी। इसलिए उन नमाज़ों के तुफ़ैल में हमारी कमी वाली इबादतें भी क़बूल हो जाएँगी। यह है इत्तेहाद का बहुत ही ख़ूबसूरत फल।

इत्तेहाद के बग़ैर अफराद तो ज़िन्दा रह सकते हैं क़ौमें नहीं। इत्तेहाद क़ौम की रूह का नाम है। इत्तेहाद ही ताक़त है और इत्तेहाद ही ज़िन्दगी है। जब अनासिर में इत्तेहाद होता है तो ज़िन्दगी सामने आती है और यही इत्तेहाद जब ख़त्म होता है तो मौत का पैग़ाम आता है:

ज़िन्दगी क्या है अनासिर में ज़हूरे तरतीब
मौत क्या है इन्हीं अजज़ा का परेशाँ होना

दुश्मन की सबसे पहली कोशिश यह होती है कि सामने वाले के इत्तेहाद को तोड़ डाले। स्पेन की इबरतअंगेज़ तारीख़ हमारे सामने है। जहाँ मुसलमानों की तबाही की वजह उनके झगड़े और आपसी जंग थी।

आज इस्लाम के ख़िलाफ सारी ताक़तें आपस में एक होकर इस्लाम के ख़िलाफ खड़ी नज़र आ रही हैं। उन्होंने अपने सारे झगड़े किनारे रख दिए हैं। ईसाई और यहूदी जिन्होंने हमेशा एक दूसरे के गले काटे हैं आज गले मिल रहे हैं। यहाँ तक कि पिछले पोप ने फतवा जारी किया कि जनाबे ईसा (अ0) को यहूदियों ने सूली पर नहीं चढ़ाया। यह इतना बड़ा झूठ सिर्फ इसलिए बोला ताकि यह दोनों क़ौमें एक होकर मुसलमानों का मुक़ाबला करें।

रसूले इस्लाम (स0) इसलिए भेजे गए थे कि काफिरों को मुसलमान बनाएँ लेकिन कुछ हमारे मोलवी हज़रात मुसलमानों को काफिर बनाने का मुक़द्दस फ़र्ज़ अन्जाम देते रहते हैं। इस वक़्त दुनिया में जहाँ–जहाँ मुसलमान नुक़सान उठा रहे हैं वह सब अपने ही झगड़ों की वजह से। और जब तक मुत्तहेद होकर एक मरकज़ पर नहीं आ जाएँगे इसी तरह नुक़सान उठाते रहेंगे और ख़ुदग़र्ज़ लोग इसी तरह बुरे फाएदे उठाते रहेंगे। हिन्दुस्तान में भी मुसलमानों के हुक़ूक़ जो बराबर दबाए जा रहे हैं वह ख़ुद मुसलमानों में इत्तेहाद के न होने के सबब से हैं। इसमें अवाम का क़सूर कम और ख़ास लोगों की ज़िम्मेदारी ज़ियादा है। इस वक़्त मुसलमानों के सारे फिरक़े एक कश्ती पर सवार हैं जो मुख़लिफ़तों से समुन्द्र में डाँवाडोल है अगर इस कश्ती पर सवार लोग आपस में लड़ गए तो कश्ती डूबने की वजह से सब डूबेंगे। न शीआ बचेंगे न सुन्नी, न देवबन्दी न बरेलवी। इसलिए अगर अपने को बचाना है तो इत्तेहाद को तो दिखाना ही होगा। *''वमाअलैना इल लल बलाग़''*

□□□